CLASS : 10th (Secondary) **1965/1917**

Series : Sec. M/2017

Total No. of Printed Pages : **16** ***SET : A, B, C & D***

MARKING INSTRUCTIONS AND MODEL ANSWERS

MUSIC HINDUSTANI (Vocal)

(Academic/Open)

(Only for Fresh Candidates)

उप-परीक्षक मूल्यांकन निर्देशों का ध्यानपूर्वक अवलोकन करके उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें। यदि परीक्षार्थी ने प्रश्न पूर्ण व सही हल किया है तो उसके पूर्ण अंक दें।

General Instructions :

(i) *Examiners are advised to go through the general as well as specific instructions before taking up evaluation of the answer-books.*

(ii) *Instructions given in the marking scheme are to be followed strictly so that there may be uniformity in evaluation.*

(iii) *Mistakes in the answers are to be underlined or encircled.*

(iv) *Examiners need not hesitate in awarding full marks to the examinee if the answer/s is/are absolutely correct.*

(v) Examiners are requested to ensure that every answer is seriously and honestly gone through before it is awarded mark/s. It will ensure the authenticity as their evaluation and enhance the reputation of the Institution.

(vi) A question having parts is to be evaluated and awarded partwise.

(vii) If an examinee writes an acceptable answer which is not given in the marking scheme, he or she may be awarded marks only after consultation with the head-examiner.

(viii) If an examinee attempts an extra question, that answer deserving higher award should be retained and the other scored out.

(ix) Word limit wherever prescribed, if violated upto 10%. On both sides, may be ignored. If the violation exceeds 10%, 1 mark may be deducted.

(x) Head-examiners will approve the standard of marking of the examiners under them only after ensuring the non-violation of the instructions given in the marking scheme.

(xi) *Head-examiners and examiners are once again requested and advised to ensure the authenticity of their evaluation by going through the answers seriously, sincerely and honestly. The advice, if not headed to, will bring a bad name to them and the Institution.*

महत्त्वपूर्ण निर्देश :

(i) *अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है। अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिन्दु अंतिम नहीं हैं। ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं। यदि परीक्षार्थी ने इनसे भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दिए हैं, तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाएँ।*

(ii) *शुद्ध, सार्थक एवं सटीक उत्तरों को यथायोग्य अधिमान दिए जाएँ।*

(iii) *परीक्षार्थी द्वारा अपेक्षा के अनुरूप सही उत्तर लिखने पर उसे पूर्णांक दिए जाएँ।*

(iv) *वर्तनीगत अशुद्धियों एवं विषयांतर की स्थिति में अधिक अंक देकर प्रोत्साहित न करें।*

(v) भाषा-क्षमता एवं अभिव्यक्ति-कौशल पर ध्यान दिया जाए।

(vi) मुख्य-परीक्षकों/उप-परीक्षकों को उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करने के लिए केवल Marking Instructions/ Guidelines दी जा रही है, यदि मूल्यांकन निर्देश में किसी प्रकार की त्रुटि हो, प्रश्न का उत्तर स्पष्ट न हो, मूल्यांकन निर्देश में दिए गए उत्तर से अलग कोई और भी उत्तर सही हो तो परीक्षक, मुख्य-परीक्षक से विचार-विमर्श करके उस प्रश्न का मूल्यांकन अपने विवेक अनुसार करें।

SET – A

---

1. काफी

2. संवादी

3. तानपूरा

4. थाट अलग है, काफी में ग नी कोमल हैं और खमाज में दोनों नी नी लगते हैं। राग काफी के वादी-संवादी स्वर प-स हैं और खमाज राग के वादी-संवादी स्वर ग-नी है।, काफी राग की नाति सम्पूर्ण-2 है और खमाज की जाति षाड़व-सम्पूर्ण है।

5. (×) → सम, (1, 2, 3) → ताली, (0) → खाली ताल चिन्ह

(ग ध) → मींड, (ग)नी → कण स्वर, (प) म प ध प → खटका

6. छः मात्रा, दो विभाग, तीन-तीन मात्राएं दो विभागों में, पहली मात्रा पर सम, चौथी मात्रा खाली, दादरा गायकी के साथ इसका प्रयोग होता है, बोल-बन्द है, तबले की ताल है।

1	2	3	4	5	6
×			०		
धा	धी	ना	धा	तिं	ना
धा धी	ना धा	तिंना	धा धीं	ना धा	तिंना

7. औड़व सम्पूर्ण जाति, दोनों नी नी बाकी शुद्ध स्वर, वादी संवाद रे प, रात्रि गायन समय, रे स्वर इस राग का महत्त्वपूर्ण स्वर है, आरोह में शुद्ध नी अवरोह में नी लगता है। थाट खमाज, समप्राकृतिक राग खमाज, तिलक कामोद, आरोह-नी स रे, म प नी, सं, अवरोह - सं नी ध, प ध म ग रे, प म ग, रे ग नी स, पकड़ - रे, म प नी, सं रें नी ध प, म ग रे ...

8. वादी किसी राग का सबसे महत्त्वपूर्ण स्वर है। राग के क्षेत्र में इसे राजा की संज्ञा दी गई है। इस स्वर का राग में सर्वाधिक प्रयोग होता है। इसी स्वर के आधार पर किसी राग का गायन-वादन समय निश्चित किया जाता है। विवादी का अर्थ है- शत्रु। वह स्वर

जिसे राग का शत्रु माना जाता है, को विवादी स्वर कहा जाता है। शत्रु होने के बावजूद भी कुशल कलाकारों द्वारा इस स्वर को बड़ी कुशलता से प्रयोग किया जाता है, जिसे राग का सौन्दर्य और बढ़ जाता है।

9. पाठ्यक्रम के किसी भी राग के द्रुत ख्याल की स्वरलिपि लिखी जा सकती है। इस प्रश्न का उत्तर अलग-अलग संगीत अध्यापकों द्वारा सीखी गई बंदिशों की विभिन्नता पर निर्भर करता है।

10. पं० भातखण्डे द्वारा किए महत्त्वपूर्ण कार्य :

- उन्होंने पूरे भारत का भ्रमण किया तथा संगीत संबंधी सामग्री का एकत्रीकरण किया।
- बड़े-बड़े उस्तादों से संगीत की बहुमूल्य बंदिशों को सीखा तथा उन्हें अपने द्वारा बनाई गई स्वरलिपि में ढालकर उनका संकलन किया।
- संगीत सम्मेलन करवाए
- संगीत संस्थाएँ खोलीं
- संगीत विषयक पुस्तकें लिखीं

- संगीत के प्रायोगिक तथा शास्त्रीय पक्ष को जोड़ने तथा उसे सरलता से समझाने हेतु कार्य किए।
- स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया।
- थाट-राग पद्धति के अन्तर्गत 10 थाटों के अन्तर्गत सभी रागों को रखने का नया नियम बनाया।
- संगीत विषय को स्कूलों, कॉलेजों में, एक ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकृत किए जाने सम्बन्धित प्रयास किए।
- संगीत को घरानों से निकालकर स्कूल, कॉलेज तथा शिक्षण संस्थाओं में लाने का अथक प्रयास किया।

अथवा

नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी :

- नाट्यशास्त्र के रचनाकार भरत हैं।
- इसके 36 अध्याय हैं जिनमें संगीत के सभी पक्षों तथा नाट्य की सम्पूर्ण जानकारी है।
- इस ग्रन्थ में 28 से 34 अध्यायों में संगीत के विभिन्न पक्षों की विस्तृत जानकारी दी गई है।
- गायन, वादन, नृत्य, नाट्य से सम्बन्धित लगभग सभी विषयों की जानकारी इस ग्रंथ में मिलती है।
- यह भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- इसे नाट्यवेद भी कहा जाता है।

SET – B

---

1. खमाज

2. वादी स्वर

3. तूंबा, तबली, गुलू, घुड़च, मनके, तारें, खूंटियां, अट्टी या अटक तारगहन, लंगोट, कील।

4. दोनों का थाट अलग है, दोनों का गायन समय अलग है, वादी-संवादी अलग है।

5. मात्राएँ 8, विभाग 02, प्रत्येक विभाग में 4-4 मात्राएँ, पहली पर सम, चौथी पर खाली, लोक संगीत में इस ताल का प्रयोग अधिक होता है।

धा	गे	ना	ती	ना	के	धी	ना
×				०			
धागे	नाती	नाके	धिंना	धागे	नाती	नाके	धिंना
×				०			

6. × सम, 123 तालीयाँ, 0 खाली, ⌒ मींड, ग$^{नी}$ कण

7. थाट-काफी, स्वर <u>ग</u> <u>नी</u> कोमल, वादी-संवादी प सं है, गायन समय रात्रि, वर्जित कोई नहीं, जाति सम्पूर्ण।

8. वादी से अलग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वर सम्वादी है सम्वादी स्वर मंत्री के समान है। यह स्वर वादी से कम तथा अन्य स्वरों से ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है।

9. यह उत्तर अलग-अलग अध्यापकों द्वारा दी गई अलग-अलग बंदिशों की विभिन्नता पर निर्भर है।

10. पं० भातखण्डे द्वारा किए महत्त्वपूर्ण कार्य :

- पूरे भारत का भ्रमण किया, संगीत सम्बन्धी सामग्री एकत्र की।
- बड़े-बड़े उस्तादों से संगीत की बहुमूल्य बंदिशें प्राप्त कीं तथा उन्हें स्वरलिपि बद्ध किया।
- संगीत सम्मेलन करवाए।
- संगीत संस्थाएँ खोलीं।
- संगीत विषयक पुस्तकें लिखीं।
- संगीत के प्रायोगिक तथा शास्त्रीय पक्ष को जोड़ने तथा उसे सरलता से समझाने हेतु कार्य किए।
- स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया।

- थाट-राग पद्धति के अन्तर्गत 10 थाटों के अन्तर्गत सभी रागों का वर्गीकरण किया।
- संगीत विषय को स्कूलों, कॉलेजों में, एक ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकृत किए जाने सम्बन्धित प्रयास किए।
- संगीत को घरानों से निकाला और स्कूल, कॉलेजों तथा शिक्षण संस्थाओं के माध्यम से सार्वजनिक किया।

अथवा

नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी :

- रचनाकार भरत हैं।
- प्राचीन ग्रंथ है।
- 36 अध्याय हैं।
- संगीत नाट्य विषयक सम्पूर्ण जानकारी है।
- 28 से 34 अध्याय संगीत से सम्बन्धित हैं।
- इसे नाट्यवेद भी कहते हैं।
- गायन, वादन, नृत्य नाट्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी है।
- भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

SET – C

1. काफी

2. वादी स्वर

3. 10

4. दोनों के थाट अलग हैं, गायन समय अलग है, जाति अलग है, चलन अलग हैं, दोनों के वादी-संवादी अलग हैं। यह विभिन्नताएँ हैं।

समानताएँ : दोनों में नी नी का प्रयोग होता है।

5. 12 मात्राएँ, 6 विभाग, 2, 2 मात्राओं के छः विभाग हैं। पहली पर सम, तीसरी खाली, पाँचवीं पर ताली, सातवीं पर खाली, नौवीं पर ताली, 11 पर ताली।

धीं धीं	धागे तिरकिट	तू ना	क त्ता	धागे तिरकिट	धी ना
×	o	2	o	3	4
धीं धीं धागे	तूना कत्ता	धागे धींना	धीधी धागे	तूना कत्ता	धागे धीन
× तिरकिट	o	तिरकिट	o तिरकिट	3	तिरकिट
		2			4

6. शुद्ध स्वरों के लिए कोई चिन्ह् नहीं, कोमल स्वर ग ध, तीव्र स्वर म', त्रिसप्तक चिन्ह : ध़ मन्द्र, ध मध्य, धं तार सप्तक।

7. थाट काफी, दोनों नी नी, गायन समय-दोपहर, इसके आरोह में शुद्ध, अवरोह में कोमल नी लगता है, वादी-संवादी - रे प, यह श्रृगार रस प्रधान राग है।

8. वादी किसी राग के क्षेत्र में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वर होता है जिसे राजा कहा जाता है। संवादी किसी राग का दूसरा महत्त्वपूर्ण स्वर है इसे मन्त्री की संज्ञा दी जाती है।

9. इस प्रश्न का उत्तर अलग-अलग अध्यापकों द्वारा लिखवाई अलग-अलग बंदिशों पर निर्भर है।

10. पं० भातखण्डे द्वारा किए महत्त्वपूर्ण कार्य :

- पूरे भारत का भ्रमण किया तथा संगीत सम्बन्धी सामग्री एकत्र की।
- बड़े-बड़े उस्तादों से संगीत की बहुमूल्य बंदिशों को सीखा तथा उन्हें अपने द्वारा बनाई गई स्वरलिपि में ढालकर प्रस्तुत किया।
- संगीत संस्थाएँ खोलीं।
- संगीत विषयक पुस्तकें लिखीं।
- संगीत के प्रायोगिक तथा शास्त्रीय पक्ष को जोड़ने तथा उसे सुलभता से समझाने हेतु कार्य किए।
- स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया।

- थाट-राग पद्धति के अन्तर्गत 10 थाटों के अन्तर्गत सभी रागों को वर्गीकृत किया।
- संगीत विषय को स्कूलों, कॉलेजों में एक ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकृत किए जाने सम्बन्धित प्रयास किए।
- संगीत को घरानों की चारदिवारी से निकालकर स्कूल, कॉलेज तथा शिक्षण संस्थाओं में लाया गया।

अथवा

नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी :

- रचनाकार भरत हैं।
- 36 अध्याय हैं जिनमें संगीत के सभी पक्षों तथा नाट्य की सम्पूर्ण जानकारी है।
- इस ग्रन्थ में 28 से 34 अध्यायों में संगीत विषयक सम्पूर्ण जानकारी है।
- गायन, वादन, नृत्य, नाट्य सभी विषयों की जानकारी है।
- यह भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- इसे नाट्यवेद भी कहा गया है।

SET – D

---

1. खमाज

2. अनुवादी स्वर

3. 04 तारें

4. दोनों के थाट समान हैं, अर्थात एक ही थाट के राग हैं दोनों में दो नी, नी नी लगते हैं। दोनों के आरोह में स्वरों की संस्था भिन्न है परन्तु अवरोह सम्पूर्ण है। दोनों वादी के राग हैं।

5. 10 मात्रा, चार विभाग 2-3-2-3 मात्रा के, पहली, तीसरी, आठवीं मात्रा पर क्रमशः सम, दूसरी, तीसरी, ताली, छठीं पर खाली हैं शास्त्रीय संगीत, शब्द भजन में इस ताल का प्रयोग है। गुरमति संगीत में इस ताल का प्रयोग हुआ है।

6. सम ×, ताली 1, 2, 3, खाली o/ मींड ⌒/ कण ग नी

7. थाट खमाज, वादी संवादी ग नी, दोनों नी, षाड़व सम्पूर्ण, रात्रि गायन समय।

8. आलाप राग का विस्तार किया जाता है यह विस्तार विलम्बित, मध्य, द्रुत तीनों ख्यालों में किया जाता है। लय चाहे कोई भी हो

परन्तु आलापचारी में स्वरों का चलन विलम्बित, मध्य ही रहता है इस क्रिया से राग में लगने वाले स्वरों में से ही एक-एक स्वर के द्वारा राग का विस्तार किया जाता है। राग का स्वरूप स्पष्ट किया जाता है। दूसरे शब्दों में विलम्बित, मध्य लय में एक-एक स्वर द्वारा जब राग के स्वरूप को स्पष्ट किया जाता है तो वह क्रिया आलापचारी कहलाती है। दूसरी तरफ वादी स्वर किसी राग के प्रधान अथवा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्वर को कहते हैं यह राग में 'राजा' के समान महत्त्व रखता है।

9. इसका उत्तर अलग-अलग संगीत अध्यापकों द्वारा सीखी तथा लिखवाई गई बन्दिशों की विभिन्नता पर निर्भर करता है।

10. पं० भातखण्डे द्वारा पूरे भारत का भ्रमण किया गया तथा संगीत सम्बन्धित जानकारी एकत्र की गई।

- संगीत उस्तादों से संगीत की बहुमूल्य बंदिशों को सीखा, प्राप्त किया तथा उनको स्वरलिपिबद्ध करके संकलित किया।
- संगीत सम्मेलन करवाए।
- संगीत संस्थाएँ खोलीं।
- संगीत विषयक पुस्तकें लिखीं।
- संगीत के Practical (प्रायोगिक) तथा Theory (शास्त्र) पक्ष को जोड़ने तथा उसे सुलभता से समझाने हेतु कई प्रयास किए।

- स्वरलिपि पद्धति का निर्माण किया।
- थाट-राग पद्धति का निर्माण किया 10 थाट माने।
- संगीत को शिक्षण संस्थाओं में ऐच्छिक विषय के रूप में स्वीकृत किए जाने सम्बन्धित कार्य किए।
- संगीत को घरानों की चारदिवारी से निकालकर आम लोगों तक पहुँचाने का कार्य किया।

अथवा

नाट्यशास्त्र से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण जानकारी :

- नाट्यशास्त्र के रचनाकार भरत हैं।
- 36 अध्याय हैं जिनमें संगीत के सभी पक्षों तथा नाट्य की जानकारी है।
- इसके 28 से 34 अध्याय संगीत से सम्बन्धित हैं।
- गायन, वादन, नाट्य तथा नृत्य से सम्बन्धित सम्पूर्ण जानकारी मिलती है।
- यह भारतीय संगीत का एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।
- इसे नाट्यवेद भी कहा गया है।